



Original Article

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भागीदारी और जिम्मेदारी

अनुज कुमार

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

किशोरी सिन्हा महिला महाविद्यालय औरंगाबाद, बिहार

Manuscript ID:

IJAAR-130420

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 4

March – April 2026

Pp. 117 - 121

Submitted: 18 Mar. 2026

Revised: 30 Mar. 2026

Accepted: 05 Apr. 2026

Published: 10 Apr. 2026

Corresponding Author:

अनुज कुमार

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.20269709

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.20269709>



Creative Commons



सारांश:

यह लेख राष्ट्र निर्माण में युवाओं की व्यापक, गहन और बहुआयामी भूमिका का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। युवा वर्ग किसी भी राष्ट्र की सबसे महत्वपूर्ण शक्ति और पूंजी होता है, क्योंकि उनमें अपार ऊर्जा, नवीन सोच, रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता और परिवर्तन लाने की अद्भुत योग्यता निहित होती है। वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में युवाओं की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है, क्योंकि वे न केवल सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों के वाहक हैं, बल्कि वे नवाचार और प्रगति के अग्रदूत भी हैं।

इस लेख में शिक्षा, सामाजिक सुधार, आर्थिक विकास, तकनीकी उन्नति, राजनीतिक सहभागिता तथा राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे प्रमुख क्षेत्रों में युवाओं के योगदान को विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया गया है। यह भी बताया गया है कि किस प्रकार युवा अपनी प्रतिभा, परिश्रम और संकल्प के माध्यम से राष्ट्र को आत्मनिर्भर, सशक्त और विकसित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, युवाओं की जिम्मेदारियों पर भी विशेष बल दिया गया है, जैसे—नैतिक मूल्यों का पालन, सामाजिक सद्भाव बनाए रखना, पर्यावरण संरक्षण, और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी।

लेख में वर्तमान समय में युवाओं के समक्ष उपस्थित चुनौतियों—जैसे बेरोजगारी, दिशाहीनता, नशे की लत, तकनीक का दुरुपयोग, मानसिक तनाव और मूल्यहीनता—का भी गहन विश्लेषण किया गया है। इन समस्याओं के समाधान के लिए उचित शिक्षा, कौशल विकास, सकारात्मक मार्गदर्शन और सरकारी नीतियों की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यदि युवाओं को सही दिशा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नैतिक मार्गदर्शन और समान अवसर प्रदान किए जाएँ, तो वे न केवल अपने जीवन को सफल बना सकते हैं, बल्कि राष्ट्र को प्रगति, समृद्धि और वैश्विक प्रतिष्ठा के उच्चतम शिखर तक पहुँचा सकते हैं। इसलिए युवाओं की सक्रिय भागीदारी और जिम्मेदारी ही एक सशक्त, समृद्ध और विकसित राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला है।”

मुख्य शब्द : युवा शक्ति, राष्ट्र निर्माण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, आत्मनिर्भरता, नवाचार, नेतृत्व क्षमता, तकनीकी प्रगति, सामाजिक जागरूकता

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

अनुज कुमार (2026). राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भागीदारी और जिम्मेदारी. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(4), 117 - 121. <https://doi.org/10.5281/zenodo.20269709>



परिचय:

किसी भी राष्ट्र का वर्तमान और भविष्य उसके युवाओं पर निर्भर करता है। युवा वर्ग ऊर्जा, उत्साह, साहस और नवीन सोच का प्रतीक होता है। यही कारण है कि युवाओं को राष्ट्र की रीढ़ कहा जाता है। राष्ट्र निर्माण केवल भौतिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और नैतिक उन्नति भी शामिल होती है। इस व्यापक और सतत प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रभावशाली और निर्णायक होती है।

आज का युग तीव्र परिवर्तन और प्रतिस्पर्धा का युग है, जहाँ ज्ञान, तकनीक और नवाचार की महत्ता निरंतर बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में युवा वर्ग ही वह शक्ति है, जो इन परिवर्तनों को समझकर उन्हें सकारात्मक दिशा दे सकता है। युवाओं में नई चुनौतियों का सामना करने का साहस, कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता तथा समाज को बेहतर बनाने की प्रेरणा निहित होती है। वे केवल अपने व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

युवा वर्ग सामाजिक चेतना का वाहक भी होता है। वे समाज में व्याप्त असमानता, कुरीतियों और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाते हैं और एक न्यायपूर्ण तथा समतामूलक समाज की स्थापना में योगदान देते हैं। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से वे लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत करते हैं। इसके साथ ही, युवा आधुनिक तकनीकों को अपनाकर राष्ट्र को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

आज भारत जैसे विकासशील देश के लिए युवाओं की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यहाँ जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवा है। यदि इस युवा शक्ति का सही दिशा में उपयोग किया जाए, तो यह देश के लिए एक

वरदान सिद्ध हो सकती है। इसके विपरीत, यदि युवाओं को उचित मार्गदर्शन और अवसर न मिले, तो यही शक्ति समस्या का कारण भी बन सकती है।

अतः यह आवश्यक है कि युवाओं को न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए, बल्कि उनमें नैतिक मूल्यों, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी विकसित की जाए। जब युवा अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी समझेंगे, तभी वे राष्ट्र निर्माण में प्रभावी योगदान दे पाएँगे।” इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की भागीदारी और जिम्मेदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है, और यही किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति का आधार बनती है।

मुख्य भाग :

1. शिक्षा और बौद्धिक विकास में युवाओं का योगदान:

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास की आधारशिला होती है, और युवा वर्ग इस आधार को सुदृढ़ बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। एक शिक्षित और जागरूक युवा न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन को सफल एवं समृद्ध बनाता है, बल्कि समाज को भी प्रगतिशील, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। शिक्षा के माध्यम से युवाओं में तर्कशीलता, विवेक, अनुशासन और निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है, जो राष्ट्र निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

आज के युवा विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रबंधन और अनुसंधान जैसे विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति कर रहे हैं। वे नई-नई खोजों, आविष्कारों और नवाचारों के माध्यम से देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल प्लेटफॉर्म और शोध कार्यों में युवाओं की सक्रिय भागीदारी देश



की बौद्धिक संपदा और नवाचार क्षमता को निरंतर मजबूत कर रही है।

डिजिटल युग में शिक्षा के स्वरूप में भी व्यापक परिवर्तन आया है। ऑनलाइन कक्षाएँ, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, वर्चुअल लैब और डिजिटल पुस्तकालयों के माध्यम से ज्ञान तक पहुँच पहले की तुलना में अधिक सरल और व्यापक हो गई है। युवा इन आधुनिक संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर अपनी ज्ञान-सीमा का विस्तार कर रहे हैं और स्वयं को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बना रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, युवाओं का दायित्व है कि वे केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित न रहें, बल्कि शिक्षा को जीवन में आत्मसात करें और समाज के विकास में उसका उपयोग करें। जब युवा ज्ञान को व्यवहार में उतारते हैं, तभी वह राष्ट्र निर्माण में वास्तविक योगदान दे पाते हैं। इस प्रकार, शिक्षा और बौद्धिक विकास के क्षेत्र में युवाओं की भूमिका न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि राष्ट्र की प्रगति का प्रमुख आधार भी है।

2. सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता में युवाओं की भूमिका:

युवा समाज में परिवर्तन के सबसे सशक्त और प्रभावशाली माध्यम माने जाते हैं। उनमें न केवल नई सोच और ऊर्जा होती है, बल्कि अन्याय और कुरीतियों के विरुद्ध खड़े होने का साहस भी होता है। वे समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक असमानता तथा रूढ़िवादी सोच के खिलाफ आवाज उठाकर एक न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

युवा वर्ग नारी सशक्तिकरण, स्वच्छता अभियान, शिक्षा के प्रसार, स्वास्थ्य जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाता है। वे लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हैं तथा समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करते हैं।

विभिन्न सामाजिक अभियानों, स्वयंसेवी कार्यों और जनआंदोलनों के माध्यम से युवा समाज को जागरूक और संगठित करते हैं।”

वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म युवाओं के लिए एक शक्तिशाली माध्यम बन गए हैं। इनके माध्यम से वे अपनी बात व्यापक स्तर पर पहुँचाते हैं, जन-जागरूकता फैलाते हैं और सामाजिक मुद्दों पर लोगों को विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी सक्रिय भागीदारी और जागरूक दृष्टिकोण समाज को आधुनिक, प्रगतिशील और वैज्ञानिक सोच की ओर अग्रसर करता है।

इस प्रकार, सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता के क्षेत्र में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि युवा अपनी ऊर्जा और विचारों का उपयोग सकारात्मक दिशा में करें, तो वे समाज को नई दिशा देने के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

3. आर्थिक विकास और उद्यमिता में युवाओं की भूमिका:

राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में युवाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक होता है। युवा वर्ग अपनी ऊर्जा, कौशल और नवाचार के माध्यम से अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान करता है। वर्तमान समय में उद्यमिता (Entrepreneurship) युवाओं के बीच तेजी से विकसित हो रही है। युवा नए-नए स्टार्टअप्स और व्यवसाय स्थापित कर न केवल आत्मनिर्भर बन रहे हैं, बल्कि अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर उत्पन्न कर रहे हैं।

युवाओं की रचनात्मक सोच और तकनीकी दक्षता उत्पादन, सेवा क्षेत्र और व्यापार को आधुनिक रूप प्रदान कर रही है। वे डिजिटल अर्थव्यवस्था, ई-कॉमर्स, फिनटेक और ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को विस्तार दे रहे हैं। “आत्मनिर्भर भारत” जैसे राष्ट्रीय अभियानों में



युवाओं की सक्रिय भागीदारी देश को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है। इस प्रकार, युवा केवल नौकरी पाने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बनकर राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

4. राष्ट्रीय सुरक्षा और कर्तव्यनिष्ठा में युवाओं की भूमिका:

राष्ट्र की सुरक्षा और अखंडता बनाए रखने में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। देश की सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों में युवा ही प्रमुख रूप से सेवा देते हैं और अपने साहस, अनुशासन तथा कर्तव्यनिष्ठा के बल पर देश की रक्षा करते हैं। वे कठिन और विपरीत परिस्थितियों में भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटते और राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान देने को सदैव तत्पर रहते हैं।

इसके अतिरिक्त, आपदा प्रबंधन, राहत कार्यों और सामाजिक सेवा के क्षेत्रों में भी युवा बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। प्राकृतिक आपदाओं—जैसे बाढ़, भूकंप या महामारी—के समय युवा मानवता की सेवा करते हुए पीड़ितों की सहायता करते हैं। उनका यह सेवा-भाव राष्ट्र के प्रति उनकी जिम्मेदारी और समर्पण को दर्शाता है।⁴

5. राजनीतिक सहभागिता और नेतृत्व में युवाओं की भूमिका:

लोकतांत्रिक व्यवस्था में युवाओं की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। युवा मतदान के माध्यम से अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं और देश के नेतृत्व का चयन करते हैं। इसके साथ ही, वे जन-जागरूकता अभियानों, सामाजिक आंदोलनों और नीति-निर्माण प्रक्रियाओं में भाग लेकर राष्ट्र की राजनीतिक दिशा को प्रभावित करते हैं।

युवाओं में नई सोच, पारदर्शिता और परिवर्तन की भावना होती है। वे भ्रष्टाचार, असमानता और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाते हैं तथा ईमानदार और उत्तरदायी शासन व्यवस्था

की मांग करते हैं।⁵ युवाओं की नेतृत्व क्षमता उन्हें भविष्य का सशक्त और दूरदर्शी नेता बनाती है, जो राष्ट्र को सही दिशा में आगे बढ़ा सकता है।

6. तकनीकी विकास और नवाचार में युवाओं की भूमिका:

वर्तमान युग तकनीकी क्रांति का युग है, और इस क्षेत्र में युवाओं की भूमिका अत्यंत अग्रणी है। युवा नई-नई तकनीकों का विकास और उनका प्रभावी उपयोग करके देश को डिजिटल रूप से सशक्त बना रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, साइबर सुरक्षा, डेटा विज्ञान और डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे क्षेत्रों में युवाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है।

वे नवाचार के माध्यम से जीवन को सरल, सुविधाजनक और उत्पादक बना रहे हैं। डिजिटल इंडिया जैसी पहलें युवाओं की सक्रियता के कारण ही सफल हो रही हैं। तकनीकी ज्ञान और रचनात्मकता के बल पर युवा देश को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

7. चुनौतियाँ और समाधान:

यद्यपि युवाओं में अपार क्षमता और संभावनाएँ निहित हैं, फिर भी वर्तमान समय में वे अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। बेरोजगारी, दिशाहीनता, नशे की प्रवृत्ति, मानसिक तनाव और सोशल मीडिया का दुरुपयोग जैसी समस्याएँ उनके विकास में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। इन चुनौतियों के कारण कई बार युवाओं की ऊर्जा नकारात्मक दिशा में प्रवाहित हो जाती है, जो राष्ट्र के लिए भी चिंता का विषय है।⁶

इन समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है कि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण और उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाए। सरकार को रोजगार के



अवसर बढ़ाने, उद्यमिता को प्रोत्साहन देने और युवा कल्याण योजनाओं को प्रभावी बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए। इसके साथ ही, परिवार और समाज को भी युवाओं को नैतिक मूल्यों, अनुशासन और सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करना चाहिए।

यदि युवाओं को सही दिशा, प्रेरणा और अवसर मिलें, तो वे इन चुनौतियों को अवसर में बदल सकते हैं और राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को और अधिक सशक्त बना सकते हैं।

निष्कर्ष:

अंततः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि युवा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति, संपदा और आशा के केंद्र होते हैं। वे केवल राष्ट्र के भविष्य के निर्माता ही नहीं, बल्कि वर्तमान के सक्रिय सहभागी भी हैं। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, व्यापक और निर्णायक होती है, क्योंकि उन्हीं के प्रयासों से समाज में प्रगति, नवाचार और सकारात्मक परिवर्तन संभव होता है।”

यदि युवाओं को सही दिशा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नैतिक मूल्यों का संस्कार और समान अवसर प्रदान किए जाएं, तो वे अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करते हुए राष्ट्र को विकास, समृद्धि और वैश्विक प्रतिष्ठा के उच्चतम शिखर तक पहुंचा सकते हैं। वे अपने ज्ञान, कौशल और परिश्रम के बल पर देश को आत्मनिर्भर, सशक्त और प्रगतिशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

इसके साथ ही, यह भी आवश्यक है कि युवा अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी समझें। उन्हें अनुशासन, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक जिम्मेदारी के मूल्यों को अपनाकर समाज के लिए आदर्श बनना चाहिए।

राष्ट्र के प्रति समर्पण, एकता और भाईचारे की भावना ही उन्हें सच्चा नागरिक बनाती है।

सरकार, समाज और परिवार—तीनों का यह कर्तव्य है कि वे युवाओं को सकारात्मक मार्गदर्शन, उचित संसाधन और प्रोत्साहन प्रदान करें, ताकि वे अपनी प्रतिभा को सही दिशा में विकसित कर सकें। जब युवाओं की ऊर्जा और क्षमता को सही दिशा मिलेगी, तब वह राष्ट्र की प्रगति का सबसे बड़ा साधन बन जाएगी।”

इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि युवाओं की सक्रिय भागीदारी, जिम्मेदारी और सकारात्मक दृष्टिकोण ही एक सशक्त, समृद्ध, विकसित और आदर्श राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला है।

संदर्भ सूची:

1. सिंह, रामप्रसाद. भारतीय समाज और युवा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018, पृष्ठ 45–50।
2. शर्मा, आर. के. आधुनिक भारत में शिक्षा. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2020, पृष्ठ 120–125।
3. वर्मा, एस. पी. राष्ट्र निर्माण और युवा शक्ति. नई दिल्ली: हिंदी साहित्य सदन, 2019, पृष्ठ 78–82।
4. India 2020, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 1998, पृष्ठ 30–35।
5. Ignited Minds, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 2002, पृष्ठ 66–70।
6. युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार. युवा नीति एवं कार्यक्रम. नई दिल्ली, 2021, पृष्ठ 10–15।
7. नीति आयोग. भारत में युवा और विकास रिपोर्ट. नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 25–30।
8. यूनेस्को. Youth and Nation Building Report. पेरिस, 2020, पृष्ठ 40–45।